सम्पादक के नाम

पढाई का मतलब ,जो किताब में लिखा है?

सच बात तो यह है कि हमारी अध्ययन-प्रणाली में ही यह नहीं है कि हम साहित्य को लोकजीवन की पृष्ठभूमि में समझ सकें ! "हमने कमरे में बैठ कर पढना तो सीखा है , उसे लोकजीवन के सन्दर्भों से जोडना नहीं सीखा ! मैं एम ए कर रहा था , मेरे प्रोफेसर मुझे किताब में लिखी बात पढा रहे थे कि विद्यापति शृंगारी कवि हैं , जयदेव शृंगारी कवि हैं ।

दूसरी ओर मैं वृन्दावन में देखता था कि मृदंग बज रही है , करताल और मजीरे गूंज रहे हैं तथा असम , उडीसा , बंगाल के सौ-सौ टोल जयदेव की पदावली पर संकीर्तन-नृत्य कर रहे हैं , आनन्द में झूम रहे हैं , जीवन को धन्य बना रहे हैं । वे आलोचक जिन्होंने लिख दिया कि जयदेव शृंगारी हैं , अपने मन को जान सके थे किन्तु लोकजीवन को वे कहां देख सके थे? परन्तु इसमें हमारे प्रोफेसर का दोष ही क्या था? किताब में जो लिख रहा था और पढाई का मतलब ,जो किताब में लिखा है।

- राजीव रंजन चतुर्वेदी

मोदी सरकार के निशाने पर अब सीआइसी भी

मोदी द्वारा देश की महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्थाओ जैसे चुनाव आयोग, रिजर्व बैंक, सुप्रीम कोर्ट आदि को घुटनों पर ले आने के बाद अब केंद्रीय सूचना आयोग को निशाने पर लिया गया है।

मामला है सूचना के अधिकार यानी आरटीआई कानून में संशोधन का। इस बारे में प्रस्तावित संशोधन के खिलाफ केंद्रीय सूचना आयोग के सूचना आयुक्त श्रीधर आचार्युलू ने 19 जुलाई को वरिष्ठतम आयुक्त यशोवर्धन आजाद को पत्र लिखा है और उनसे इस विषय पर सभी सूचना आयुक्तों की एक बैठक बुलाने को कहा है।

आचार्युलू ने लिखा है कि आरटीआई में प्रस्तावित बदलाव का उद्देश्य सूचना आयुक्त पर सीधे नियंत्रण करना है। प्रस्तावित बिल आरटीआई एक्ट 2005 के उद्देश्य को ही खत्म कर देगा। अभी तक यह मामला सिर्फ वेतन से संबंधित ही समझा जा रहा था लेकिन अब इस पत्र से यह साफ हो गया है कि विषय ओर अधिक गंभीर है।

दरअसल सरकार सूचना आयुक्तों के कार्यकाल में भी बदलाव करने की तैयारी में है। आरटीआई एक्ट के अनुच्छेद 13 और 16 में लिखा है कोई भी सूचना आयुक्त पांच साल के लिए नियुक्त होगा और वो 65 साल की उम्र तक पद पर रहेगा। लेकिन संशोधन बिल में ये प्रावधान है कि अब से केंद्र सरकार ये तय करेगी कि केंद्रीय सूचना आयुक्त और राज्य सूचना आयुक्त कितने साल के लिए पद पर रहेंगे।

यानी अब सूचना आयोग में पपेट की भर्ती की जाएगी। इस संशोधन के ज़रिये सरकार सूचना आयोग की स्वतंत्रता और स्वायत्तता नियंत्रित करना चाह रही है जिसका पुरजोर विरोध किया जाना चाहिए।

- गिरीश मालवीय

आज का दिन

1. आज के दिन मंगल पांडे पैदा हुए थे। बलिया के थे। बैरकपुर छावनी में तैनाती थी। कारतूस में गाय की चर्बी की बात सुनकर उनकी धार्मिक भावना आहत हो गई थी। उन्हें अंग्रेज़ों से नाराज़गी हो गई और अपने अफसर पर हमला बोल दिया। बाद में वो कोर्टमार्शल करके फांसी चढ़ाए गए।

2. उधर मुसलमानों के बीच ये बात फैली कि कारतूसों में सुअर की चर्बी है। भावना उनकी भी आहत हुई और महीने भर बाद मेरठ में सेना की टुकड़ी ने विद्रोह किया तो इस बार वो भी साथ थे।

3. बंकिमचंद्र का आनंदमठ पढ़िए। आपको उसमें साधु संन्यासियों की फौज मिलेगी। वो भारत माता की सेवा में निकली है, लेकिन अद्भुत है कि उसके निशाने पर सिर्फ शासक अंग्रेज़ नहीं हैं, बल्कि वो धार्मिक कारणों से यवनों की हत्या भी करना चाहती है। अपने वीरगान में वो वंदे मातरम गाती है जो देवी पूजा को महत्व देता है।

4. खिलाफत आंदोलन अंग्रेज़ों के खिलाफ मुसलमानों का आंदोलन था। मुसलमान नाराज़ थे क्योंकि अंग्रेज़ प्रथम विश्वयुद्ध में जीतने के बाद तुर्की के खलीफा को गद्दी से हटा रहे थे। खलीफा में मुस्लिम आस्था किसी से छिपी नहीं है। महात्मा गांधी ने इस आंदोलन को समर्थन इसीलिए दिया क्योंकि उनकी समझ थी कि इसके बदले मुसलमानों का बड़ा हिस्सा भारत में अंग्रेज़ों के खिलाफ चल रहे आंदोलन में उनका साथ देगा। जिन्ना इस नीति के विरोधी थे। इन उदाहरणों में एक बात कॉमन है। भारतीय धार्मिक रूप से अति सक्रिय कौम है, चाहे वो हिंदू हो या मुसलमान। राष्ट्र के लिए खड़े होने के लिए अभी तक उन्हें किसी धार्मिक उत्प्रेरणा की ज़रूरत ही पड़ी है। आज जिस राष्ट्रवाद को बौराए रूप में आप लिंचिंग करते देखते हैं वो भी एक धर्म से उपजी आक्रामकता की प्रतिक्रिया से ज्यादा कुछ नहीं। इस सबमें राष्ट्र कहीं नहीं है, सबके मूल में संगठित धर्म से उपजा उन्माद है।

- नितिन ठाकुर

चौकीदार की यह कैसी चौकसी कि चौकी लेकर भागा चौकसी

रवीश कुमार की विशेष रिपोर्ट

चौकसी अपनी चौकी लेकर भारत से भागा था, भाग रहा था मगर अब थक कर उसने अपनी चौकी एंटिगुआ में टिका दी है। हीरा व्यापारी मेहुल चौकसी ग़ज़ब का हीरा निकला। उसके चौकीदार भी हीरा निकले। चौकीदार चौकीदारी करते रह गए और चौकसी की टैक्सी उस एंटीगुआ में पार्क हो गई है जहां के कर्टली एम्ब्रोस की घातक गेंदबाज़ी से भारतीय बल्लेबाज़ डरते थे। जिस तेज़ी से मेहुल और नीरव पंजाब नेशनल बैंक के 13,500 करोड़ लेकर भागे हैं, कर्टली एम्ब्रोस उतनी तेज़ी से भाग ही नहीं सकते हैं।

मेहुल चौकसी ने एंटीगुआ का पासपोर्ट बनवा लिया है। कुछ पैसे देकर उसकी नागरिकता ले ली है। भारत की नागरिकता और पासपोर्ट छोड़ दिया है। प्रधानमंत्री मोदी कहते रहते हैं कि भारत के पासपोर्ट का भाव बढ़ गया है। नीरव मोदी को भी खूब घूमने का शौक है। भारत से भागने के बाद उसने कई देशों की यात्राएं की हैं। तब जब भारत ने उसका पासपोर्ट रद्द कर दिया था। अब चूंकि प्रधानमंत्री के हिसाब से भारत के पासपोर्ट का भाव बढ़ गया है इसलिए तमाम मुल्कों के इमिग्रेशन विभाग ने रद्द किए हुए पासपोर्ट पर भी नीरव को घूमने दिया है। चौकसी ने भारत का पासपोर्ट त्याग कर प्रधानमंत्री का अपमान किया है। एंटीगुआ अगर भारत को ऐसे आंख दिखाएगा तो हमारे मोदी जी उसे निकारागुआ भेज देंगे!

आने दीजिए रवांडा से मोदी जी को, 200 गायों की इंटरनेशनल डिलिवरी में ज़्यादा वक्त नहीं लगता है। ये काम तो आमेज़ॉन कर सकता था मगर गाय का मामला है तो मोदी जी खुद लेकर गए हैं। वहां से लौटते ही वे खुद ही वहां के राष्ट्रपति को फोन करेंगे और कहेंगे कि मैं अपने नागरिक को भारत नहीं ला सका, कम से कम तुम अपने नागरिक को भारत भेज दो। तब तक सुष्मा जी एंटीगुआ के राजदूत को बुलाकर उन्हें इस्लामाबाद भेज दें। एंटीगुआ ने मेहुल चौकसी को पासपोर्ट देकर भारत को चुनौती दी है। उसकी हिम्मत देखिए, इंटरपोल के ज़रिए भारत को नहीं बताया, बल्कि सीधे बताया है। ऐसा इंडियन एक्सप्रेस में सूत्रों के हवाले से छपा है।

अच्छी बात है कि एंटीगुआ जाकर भी मेहुल चौकसी भारत में भीड़ द्वारा की जा रही हत्या की ख़बरों को ग़ौर से पढ़ रहा है। एक बैंक की हत्या करते वक्त उसे डर नहीं लगा मगर अलवर, दादरी और धुले की घटना पढ़कर डर गया है। उसने भारत की अदालत को बता दिया है कि इसी कारण वह भारत नहीं आ रहा है। अब तो सुप्रीम कोर्ट ने व्यापक व्यवस्था भी दे दी है कि भीड़ की हत्या को कैसे रोकना है, इसके बाद भी चौकसी ने अपनी चौकी यहां से उठाकर एंटीगुआ में टिका दी है। कांग्रेस के नेता एंटीगुआ के राष्ट्रपति के साथ भारत के चौकीदार की बातचीत की तस्वीरें साझा कर रहे हैं। तस्वीर देखकर लगता है कि कल ही मोदी जी कह रहे हों कि एंटीगुआ में चौकसी को एडजस्ट कर लीजिए। लेकिन वो तस्वीर पुरानी है। इस घटना से उसका कोई संबंध नहीं है। बड़े नेता फोटो खींचाते रहते हैं।

मेहुल चौकसी को भीड़ से डर लग रहा है या उन लोगों से जो अपना नाम बाहर आने के डर से उसे डरा रहे हैं। मेरी राय में मेहुल चौकसी को एंटीगुआ के संविधान की शपथ लेते हुए सबके नाम बता देने चाहिए। आपको याद होगा नीरव मोदी के पीछे लगी जांच एजेंसी रेवाड़ी पहुंच गई, योगेंद्र यादव के रिश्तेदारों के घर। क्योंकि उन्होंने नीरव मोदी के यहां से ख़रीदारी की थी। वैसे उसकी दुकान से औरों ने भी की होगी तो क्या वहां छापे पड़े होंगे। हिसाब मांगे गए। ज़ाहिर है योगेंद्र यादव को किस लिए सज़ा दी जा रही थी।

अब संसद में फिर से चौकीदार बनाम कामदार चलेगा। राहुल गांधी बोलेंगे कि चौकीदार भागीदार हो गया है। ये कैसी चौकसी कि चौकसी ही भाग गया, भागा ही नहीं ,भारतीय से एंटीगुअन हो गया। राहुल गांधी कहेंगे कि चौकसी के चौकीदार हाज़िर हों। मोदी जी कहेंगे कि हम कामदार हैं, नामदार नहीं हैं। मेरा काम दिल्ली में तिजोरी की रक्षा करना था। किसी भागते हुए को पकड़ना नहीं। इसके बाद भी मैं तब से देश देश घूम रहा हूं कि कहीं तो माल्या मेहुल मिलेंगे। अब तो मैं गौशाला तक जाने लगा कि वहां भी छिपे होंगे तो मिल जाएंगे। नहीं मिल रहे हैं तो ये राहुल गांधी राजनीति कर रहे हैं। जो चौकीदारी मैं नहीं कर सकता, वो चौकीदारी करने के ख़्वाब देख रहे हैं। इन सबके बीच जो मालदार है वो फ़रार हैं। वो समझ गए हैं कि चुनाव आ रहे हैं। अभी सबको हमारी ज़रूरत है। रैलियां होनी हैं। सोशल मीडिया पर अभियान चलने हैं। वैसे एक भागे हुए मालदार ने संकेत दिया है कि वह भारत आ सकता है। बिजनेस स्टैंडर्ड में ख़बर छपी है कि विजय माल्या भारत आ सकता है। वो जांच एंजेसियों का सामना करने के लिए तैयार हो गया है।

अगर चैनलों पर हिन्दू मुस्लिम मसले पर डिबेट बढ़ा दें तो देश को इन सब मुद्दों से बचाया जा सकता है। टीवी पर ये सब डिस्कस करना ठीक नहीं लगता कि कोई 13,500 करोड़ लेकर भाग गया है। वैसे भी चुनाव आ रहे हैं तो पैसे की ज़रूरत पड़ती है। सबको पड़ती है।

तुम हिंदू...हम मुसलमान...इस पागलपन का अंत नहीं

यह एक खतरनाक समानता है। देश में एक तरफ निरीह मुस्लिमों की मॉब लिंचिंग कर सुनियोजित हत्याएं की जा रही हैं। दूसरी तरफ ज्ञान-विज्ञान और विवेकवाद की बात करने वालों को गोलियों से उड़ाया जा रहा है। और एक तरफ सुकुमार और असहाय बालिकाओं से नृशंस बलात्कार की घटनाएं एक साथ और एक ही तरह से चिंताजनक ढंग से बढ़ी हैं।

यह तसल्ली से और ठंडे दिमाग से सोचने की बात है कि क्या इन तीनों तरह की घटनाओं के बीच कोई अंतर्संबंध है? जी हां है। हम जिस रुग्ण मानसिकता का सामना कर रहे हैं, वह नाना रूप लेकर हमें संत्रस्त कर रही है और करेगी। इसलिए जो लोग अपनी धर्मांधता के चलते इसके मजे ले रहे हैं या चुप बैठे हैं, वे इस देश के हितचिंतक नहीं हैं। चाहे वे कितने ही बड़े नाम क्यों न हों और कितने ही बड़े संगठन क्यों न चला रहे हों? उन सबको अपने आपको मनोचिकित्सकों को उसी तरह दिखाना चाहिए, जिस तरह हम अपने स्वास्थ्य की नियमित जांच कराते हैं।

हरियाणा में एक रंगासियार बाबा पहले भक्तिभाव का झांसा देकर महिलाओं को फांसता है और फिर उनमें से एक दो नहीं, 120 महिलाओं से बलात्कार करता है। हमारी संस्कृति पत्नी के अलावा बाकी सभी से बहन या मां जैसा व्यवहार करने की सीख देती है, लेकिन अगर हम इसे न भी मानें तो कम से कम एक मर्यादित व्यवहार तो होना ही चाहिए।

रंगासियार बाबा उन महिलाओं के विडियो टेप्स बनाता है और उन्हें ब्लैकमेल करता है। एक और रंगासियार बाबा एक बालिका से बलात्कार करता है और उम्रकैद की सज़ा पाता है। कई दूसरे रंगेसियार बाबा दूसरी तरह के धत्कर्म करते हैं। एक स्वयंभू संत अपने को राम और रहीम का अवतार घोषत कर देता है और घिनौने अपराध करते हुए पकड़ा जाता है। इसके बावजूद हम देखते हैं, न्यायाधीश, चिकित्साधिकारी और बड़े-बड़े लोग इस रंगे सियार के सामने श्रद्धावनत होने जेल तक में जाते हैं।

हम में कुछ इन घटनाओं की आलोचना करते हैं और कुछ चुप रहते हैं। और कुछ प्रश्न उठाते हैं कि इस देश में सिर्फ़ हिन्दू बाबाओं पर ही कार्रवाई होती है। हमें अपने शासक वर्ग ने पिछले 70 साल में इतना धर्मांध और विवेकहीन बना दिया है कि हम अपनी नन्ही और सुकुमार बेटियों के साथ अन्याय और अत्याचार करने वाले भेड़ियों को आज वंदनीय सा समझने लगे हैं और उनके पक्ष में बेशर्मी और बेहयाई से तर्कवितर्क करते हैं। सच तो ये है कि भेड़िए भी ऐसा नहीं करते। सचमुच में तो ये इन्सानियत के नाम पर बदनुमा धब्बे हैं, जिनमें अक्सर हमारे राजनेता अपने फ़ायदे के लिए अपना-अपना रंग भरकर अपना गणित मजबूत करते हैं। कुछ दुष्ट ईसाई ननें बच्चों को बेचते हुए पाई जाती हैं। और हम पूरी ईसाइत को दुष्ट साबित करने में जुट जाते हैं। यहां तक कि मदर टेरेसा जैसी देवी तक को लांछित करने से बाज नहीं आते। इसका मतलब साफ है कि हिन्दू समाज में भी जो पूज्य और जो सम्मानीय संत हैं, वे हैं। सैकड़ों और हजारों की संख्या में सर्वत्यागी लोग हैं, जो राजनीति के चक्कर में आए बिना अपना धर्म निभा रहे हैं। इसलिए ऐसा नहीं माना जाना चाहिए कि कोई हिन्दू सांप्रदायिक हो गया है। एक ख़ास मानसिकता और मनःस्थिति वाले लोग हैं, जो एक ख़ास रौ में बह रहे हैं। ये सबके सब अच्छी डिग्रियों वाले, अच्छा खाने-पीने और पहनने वाले हैं। ये अच्छी कमाई वाले लोग हैं। ऐसी ही मनःस्थिति और विकृत सोच वाले लोग पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी हैं। पिछले दिनों प्रसिद्ध बाँग्ला साहित्यकार और प्रकाशक शाहजहां बच्चू को गोली मारकर कठमुल्ला इस्लामिस्टों ने मार डाला। यानी पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में ही ऐसी दूषित हवाएं बह रही हैं।

कुछ हिंसक दुष्ट और अत्याचारी इस्लामी नाम, लंबी दाढ़ी और सफाचट मूछ और पगड़ी धारण कर ज़ेहादी नारे लगाते हैं। इस धरती पर हिंसाचार मचाते हैं। हम पूरे धर्म को कठघरे में खड़ा कर देते हैं। न उन्हें किसी कुरआन का पता है और न किन्हीं मुहम्मद साहब का। वे वैसे ही पालतू और मानसिकदास हैं, जैसे हमारे इधर हैं। वैसे ही जैसे संकीर्ण हिन्दुत्ववादियों को वेदों की ऋचाओं, उपनिषदों की कंडिकाओं और षडदर्शन के सूत्रों से कुछ नहीं लेनादेना। न उन्होंने कभी इन्हें देखा और न पढ़ा। हैरानी तो ये है कि विज्ञान में शिक्षित और दीक्षित होने के बावजूद इनमें से बहुतेरे विज्ञान का मर्म ही नहीं जानते। विज्ञान और तकनालॉजी की समझ और धर्मांधता की कट्टरता की मिलावट ने इस धरती पर ऐसे मतांध विनाशकारी पैदा कर दिए हैं, जो अपनी ही धरती पर विध्वंस और रक्तपात रच रहे हैं।

दरअसल, हर दुष्टता अपना तर्क मढ़कर कोशिश करती है कि वह हिंसा, रक्तपात और अमानवीयता को सही ठहराए। फिर चाहे वह किसी भी धर्म से जुड़ा आतंकवाद हो या किसी विचारधारा से। वह किसी राज्य की हिंसा हो या किसी माता-पिता-पति-गुरु-शिक्षक या बॉस की। हमने लंबे समय तक धार्मिक ही नहीं, वामपंथी विचारधारा आधारित हिंसा के स्वाद को चखा है। हमारे लिए यह बहुत ही चिंता का विषय है कि आने वाले समय में अगर ये घटनाएं इसी तरह होती रहीं और गहरी निराशा और गुस्से के शिकार लोगों को किसी विदेशी एजेंसी ने पलीता दिखा दिया तो हमें गृहयुद्ध में झुलसते देर नहीं लगेगी। आखिर यह देश दुनिया के बेहतरीन देशों में एक है और इसी कारण इसकी स्वर्णिम भविष्य बहुतेरे देशों की एजेंसियों के हृदयों में एक डाह पैदा करता है।

एक साधु एक धार्मिक यात्रा के बारे में कहता है कि यह वह चीज नहीं है, जो दिखाई दे रही है या बताई या समझी जा रही है। जैसे अमरनाथ यात्रा। हमारे बहुत से साधु-संन्यासी भी कहते रहे हैं कि यह शिव लिंग नहीं है। हमारे ज्योग्राफी या भूगोल पढ़ाने वाले शिक्षकों ने हमें पढ़ाया है कि शिव लिंग जैसी आकृतियां दरअसल स्टेलैग्माइट हैं, जो बर्फीली गुफाओं में अपने आप बन जाती हैं। आप चाहें तो आज ही और अभी भूगोल के किसी सुविज्ञ शिक्षक को कॉल करके या मिलकर पूछ सकते हैं कि स्टेलैग्माइट क्या होते हैं? हमारे और आपको घरों के रेफ्रिजरेटर के डीप फ्रीजर में अक्सर ऐसी आकृतियां पाई जाती हैं। वह साधु कहता है कि हम भोलेपन में यह मान बैठते हैं कि यह कोई ईश्वरीय चीज है। लोग उनके इस तर्क पर कहते हैं, आप हमारी धार्मिक भावनाओं को ठेस लगाते हो। हम आपको सबक सिखाएंगे और उन्हें पीट डालते हैं। क्या इसका सा? सा मतलब ये नहीं कि हम विज्ञान के साथ हिंसक हो उठे हैं?

कबीर ने ऐसी ही कितनी ही चीजें कही हैं। जैसे कांकर पाथर जोरि कै मसीत लई चिनाय, ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय? आप देखिए, कबीर मुल्लों को मुर्गा तक कह देते हैं यानी कि आप बांग दे रहो हो। उन्होंने हिंदुओं को लेकर भी ऐसे कितने ही तंज कसे। कबीर ने कहा - ना जाने तेरा साहिब कैसा है। मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहिब तेरा बहिरा है। चिंउटी के पग नेवर बाजे, सो भी साहिब सुनता है। पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है। अन्दर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है।

दयानंद ने काशी में पाखंड-खंडिनी गाड़ी और हिन्दू धर्म के किसी भी संप्रदाय को बख्शा नहीं और एक-एक की जमकर खबर ली। यहां तक कि उन्होंने अंग्रेजों के शासन के बावजूद बाइबिल की अवैज्ञानिक बातों पर कड़े प्रहार किए, लेकिन किसी वायसरॉय या किसी कलेक्टर ने उन्हें कुछ नहीं कहा। बल्कि उन्हें सुरक्षा मुहैया करवाने तक को कहा। और आज हमारी सरकार? इस सरकार के आईएएस और आईपीएस? क्या इसदिन के लिए वे जन्मे थे कि किसी को सुरक्षा भी नहीं दिला पाएं और लोग मोबलिंचिंग करें? ये सबके सब भारतीय सिविल सेवा के इतिहास को आज शर्मसार करने जा रहे हैं। कानून और व्यवस्था की पूरी जिम्मेदारी है और हम नाहक ही नेताओं को गालियां दुकर अपना गुस्सा शांत कर रहे हैं।

ये तर्क वितर्क चलते रहे हैं। लेकिन इन दिनों जैसा हम लोगों का आचरण हो रहा है, क्या वह यह नहीं बताता कि हम अपना विवेक खो रहे हैं और हम स्वयं ही अपनी बुद्धि पर एक अवांछित अज्ञान की परत चढ़ाने को आतुर हैं। आज जो भी? दूध पीने के लिए गाय ले जा रहे अकबर की हत्या कर रही है, क्या वह कल किसी राम की सीता को भी अपनी हिंसा का शिकार नहीं बनाएगी? हमारी बहनें, हमारी बेटियां सीता सी ही तो पवित्र हैं। इस देश की ही नहीं, इस धरती की। सबकी सब। और अगर कोई और लोक है तो उसकी भी।

- त्रिभुवन